

Stabilization of Sand Dune

रेत के टीलों का स्थिरीकरण

हमारे देश में तमिलनाडु तथा उड़ीसा के सहस्र
तरीफ क्षेत्र रेत से प्रभावित होते हैं इसके
अतिरिक्त आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, केरल व बंगाल
के कुछ क्षेत्र भी सहस्र के रेत से प्रभावित
होते हैं देश के भीतरी भाग में रेत से प्रभावित
क्षेत्र मुख्यतः राजस्थान एवं कर्नाटक का मुख्य
क्षेत्र है।

रेत के टीलों के स्थिरीकरण का
मुख्य सिद्धांत यह है कि जिन क्षेत्रों से
रेत के टीले स्थानान्तरित होते हैं उन्हीं क्षेत्रों
में इन टीलों का स्थिरीकरण किया जाये
कम प्रभावित क्षेत्रों में वनस्पति लगाकर टीलों
का स्थिरीकरण किया जाय / अधिक प्रभावित
क्षेत्रों में वायु की गति को कम करने के
लिए बाधरोधी पट्टी टीलों के निकट लगानी
चाहिए। वायु की गति को कम करने के
लिए इन क्षेत्रों में प्रायः लकड़ी के तरबूत
झाड़ियाँ व घासों को वायु के दिशा के
विपरीत लगाते हैं टीलों को हरायी बनाये
रखने के लिए जानवरों का दबाव से सुरक्षा
करनी चाहिए।

टीलों की सुरक्षा के लिए झाड़ियाँ
या कोटदार तार से टीलों की बाँध करते
हैं तार से बाँध बनाने के लिए उ-प ग्रीन
के अन्तर पर लोहे के खम्बे लगाये
जाते हैं।

समुद्र से रेत देश के अन्दर के भागों के आने से रोकने के लिए व लीटरन टीला वायु गति से अवरोध पैदा करने के लिए बनाया जाता है टीको की ऊंचाई 10-13 मीटर तक रखते हैं टीके के आगे की ओर वायु अवरोधक के रूप में लकड़ी के 2 मीटर लम्बे 2.5 सेमी मोटे तथा 15-30 सेमी चौड़े तरल लगाये जाते हैं इन तरलों को 0.75 मी - 1.0 मी गहरा रेत में गाड़ दिया जाता है वायुरोधी वृक्षों तथा झाड़ियों की पट्टियाँ भी टीको पर लगायी जाती हैं।

रेत के टीको को स्थिर करने के लिए भूमि पर रेंगने वाली अधिक वार्षिक व अधिक संख्या में जड़ पैदा करने वाली वनस्पति जैसे Rhizomes, Tuberosous plant आदि (जो वे बढ़ते करने वाली वनस्पतियों) का रोपण लाभदायक सिद्ध होता है।

उपयोगी वृक्ष :-

अ-तरुणकीय रेत (Inland Sand)

Casuarina equisetifolia

Casuarina municata

Prosopis juliflora

Prosopis spicigera

Prosopis cinerascens

Albizia lebbek

Acaia Arabica

Acaia auriculiformis

Vitex negundo

Dalbergia sissoo

Spornea carnea

Salix Tetrasperma

Arundo donax

⑧ नदीय रेन (Coastal sand) ०

Capuarnia equestifolia

Anacardium occidentale

Calophyllum inophyllum

Acaia mangifera